सात धोबिनें और सात लकड़हारे



सात धोबिनें और सात लकड़हारे

जॉन, क्वेंटिन



पुराने ज़माने की बात है. सात धोबिनें एक साथ रहती थीं.



हर दिन वे सिर पर धोने वाले कपड़ों की टोकरियां लेकर नदी में उतरती थीं.

उनके नाम थे - डोटी, लोटी, मौली, डॉली, विनी, मिन्नी और अर्नेस्टाइन,

और वे सभी अच्छी मित्र थीं.

नदी में उतरने के बाद वो कपड़ों को छांटकर उन्हें पानी में डुबोती थीं. वो कपड़ों में साबुन लगाकर उन्हें पत्थरों पर खूब रगड़ती,पटकती थीं.

फिर कपड़ों में से साबुन निकालने के बाद वो उन्हें निचोड़ती थीं. उसके बाद वो कपड़ों को सूखने के लिए झाड़ियों और चट्टानों पर फैला देती थीं.



वे उस इलाके की सबसे अच्छी धोबिनें थीं. लेकिन फिर भी वे खुश नहीं थीं. उनकी लांड्री का मालिक, श्री बालथाज़र टाइट, बड़ा मतलबी और स्वार्थी किस्म का आदमी था. वो उन धोबिनों से सुबह से रात तक काम करवाता था.





हर दिन उन्हें सुबह-सुबह उठना पड़ता था और कपड़ों को धोने से पहले पिछले दिन के साफ़ कपड़ों को इस्त्री करना पड़ता था. और तब तक बकरी-गाड़ी, धोने वाले कपड़ों का नया लोड लेकर आ पहुँचती थी. बकरी-गाडी का डिलीवरी बॉय, बर्किन कहता था, "मुझे खेद है, देवियों, लेकिन आज कपड़े कल से कहीं ज्यादा हैं."

एक दिन गंदे कपड़ों का पहाड़ देखकर धोबिनों का दिल बैठ गया. कपड़े वाकई में बहुत अधिक थे. उन्होंने उस पहाड़ को देखा और कहा :



तभी धोबिन अर्नेस्टाइन ने सुझाव दिया, "हम इस सब को छोड़ क्यों नहीं देते."

यह सुनकर उनके चेहरे तुरंत चमक उठे.

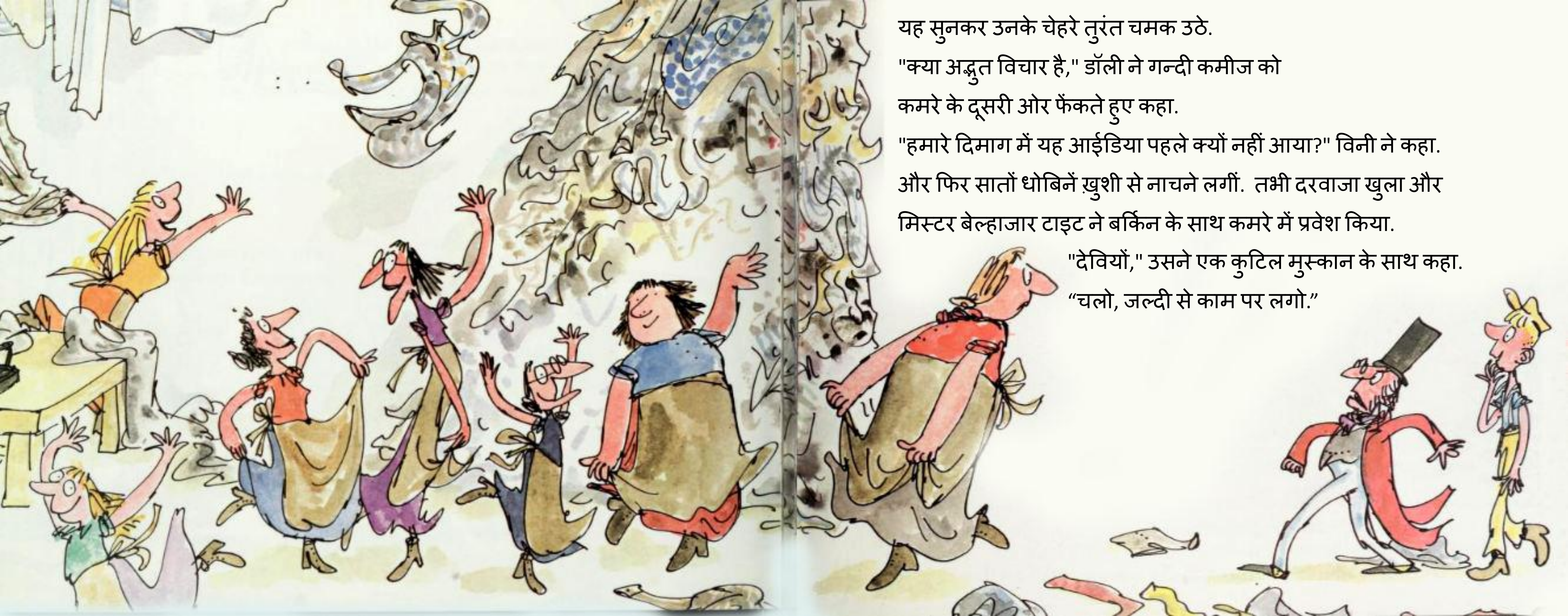
"क्या अद्भुत विचार है," डॉली ने गन्दी कमीज को कमरे के दूसरी ओर फेंकते हुए कहा.

"हमारे दिमाग में यह आईडिया पहले क्यों नहीं आया?" विनी ने कहा.

और फिर सातों धोबिनें ख़ुशी से नाचने लगीं. तभी दरवाजा खुला और मिस्टर बेल्हाजार टाइट ने बर्किन के साथ कमरे में प्रवेश किया.

"देवियों," उसने एक कुटिल मुस्कान के साथ कहा.

“चलो, जल्दी से काम पर लगो.”





फिर मिस्टर टाइट ने फर्श पर धोने के कपड़ों के विशाल टीले को देखा.
"कमाल है," उन्होंने कहा, "यह तो पहले से कहीं ज्यादा हैं."
यह सुनकर मिन्नी को इतना गुस्सा आया कि वो चिल्लाई,
"मिस्टर टाइट को ही यह काम करने दो, लड़कियों!"



फिर सातों धोबिनों ने मैले कपड़ों के पहाड़ को तब तक धकेला, जब तक कि वह मिस्टर टाइट के ऊपर गिर नहीं गया. जब उनका मालिक मुक्त होने का संघर्ष कर रहा था, तब सातों धोबिनों ने लांड्री छोड़कर बाहर की तरफ दौड़ लगाई.



वे खाली बकरी-गाड़ी में सवार हो गईं.
डॉट ने गाड़ी की बागडोर संभाली,
"चलो, लिसेन्डर," वो बकरी पर चिल्लाई.

लॉन्ड्री के जंजाल से मुक्त होकर धोबिनें इतनी उत्साहित
हुईं कि वो बकरी-गाड़ी को शहर के तालाब के बीचों-बीच
दौड़ाकर ले गयीं. उससे दोनों तरफ कीचड़ उछली
और तमाम राहगीरों के कपड़ों पर मिट्टी के छींटे पड़े.





अब उन सातों धोबिनों को रोकने वाला कोई नहीं था.
फिर वे बाजार के बीच में धड़ल्ले से गुज़रीं.
उन्होंने तमाम स्टालों, दुकानों को पलटा,
और पिंजरों में कैद जानवरों को रिहा किया.



वे एक फलों के बगीचे में रुकीं.

उन्होंने पेड़ों पर चढ़कर किसानों के पके फल खाये.



वो एक टोपी की दुकान के सामने से गुज़रीं

और उन्होंने दुकान की सारी टोपियां लूट लीं.



वे चर्च में तेज़ी से घुसीं और वहां पर उन्होंने ज़ोर से घंटे की रस्सी को खींचा.

घंटा टन! टन! करके बजा. उसके भयानक शोर को सुनकर स्थानीय लोग बुरी

तरह घबरा गए.



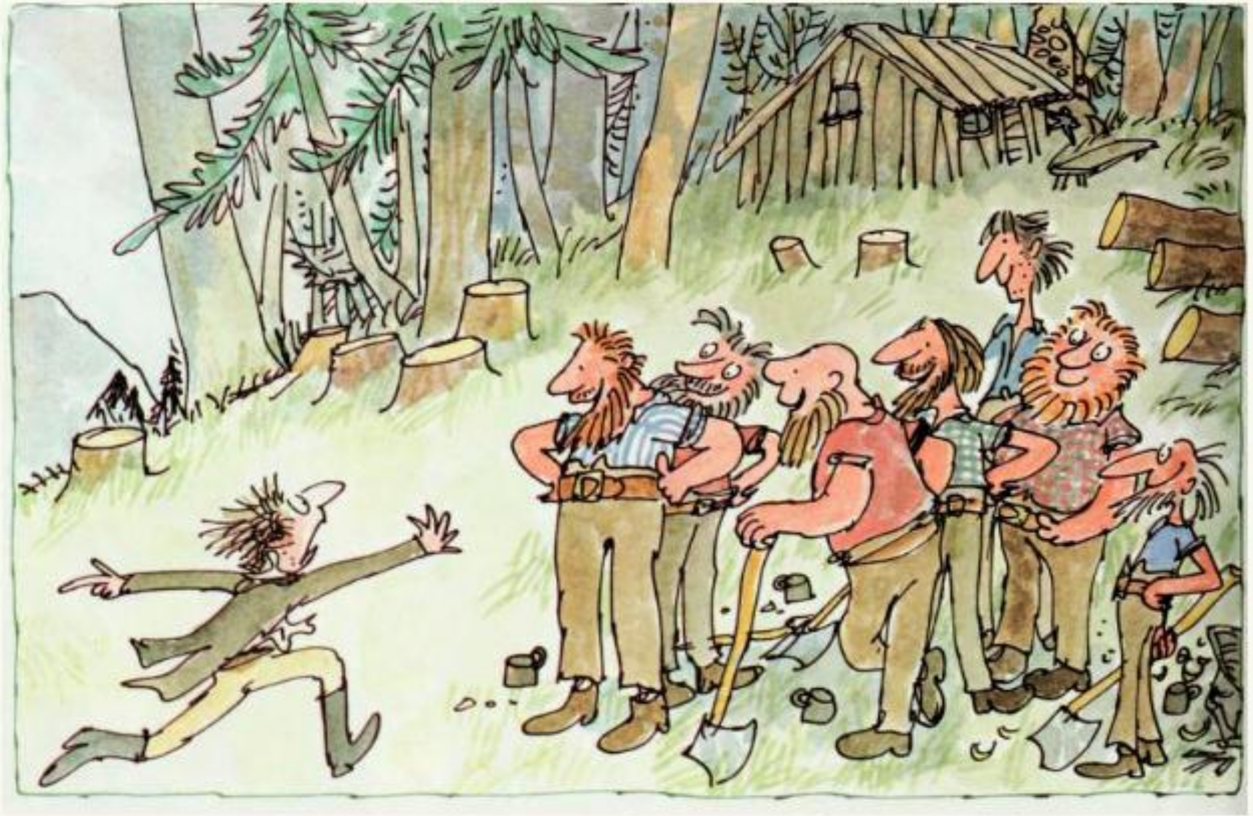


धोबिनों को इसमें इतना मज़ा आ रहा था कि वे उस मौज़ को किसी हालत में खत्म नहीं होने देना चाहती थीं. इसलिए उन्होंने दिन-ब-दिन वही उपद्रव चालू रखा. कपड़े धोते-धोते, रगड़ते-रगड़ते, धोबिनें बहुत ताकतवर और मज़बूत हो गई थीं. जिन लोगों ने उन्हें रोकने की कोशिश की वो जल्दी ही हार मान गए.





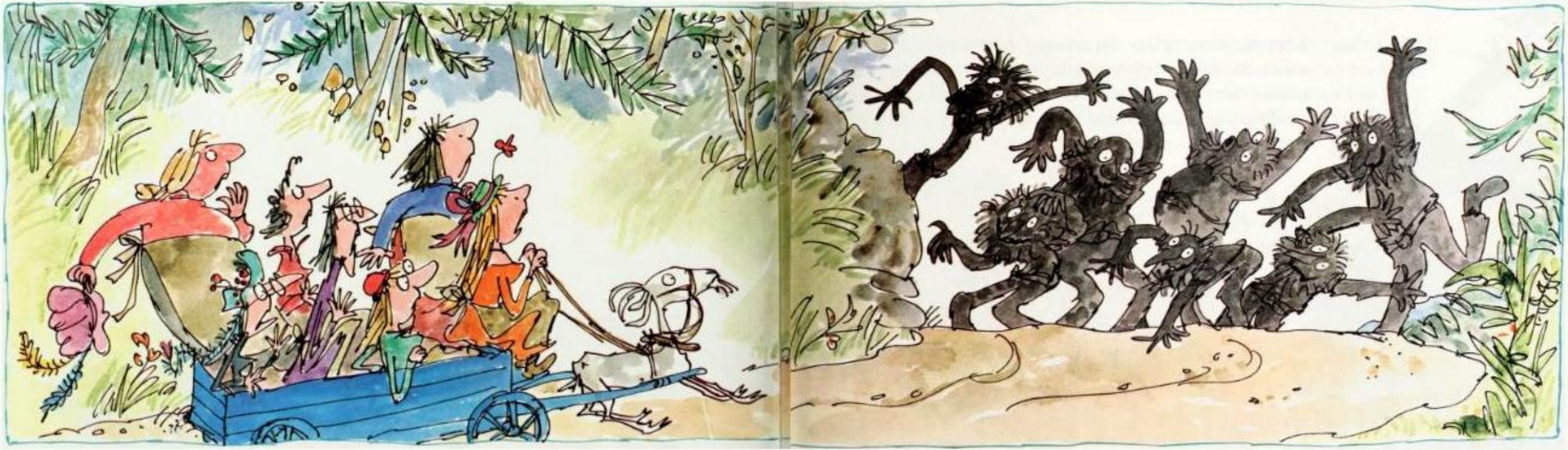
अब हर कोई उनसे दहशत खाने लगा. प्रत्येक गांव ने एक वॉच-टॉवर (मीनार) का निर्माण किया ताकि लोग दूर से उन्हें देख सकें और बाकी लोगों को उनसे आगाह कर सकें, "ज़रा बाहर देखो, वो जंगली धोबिनें आ रही हैं!" लोग उनकी बकरी-गाड़ी को देखते ही चिल्लाते.



वहीँ पास के जंगल में एक झोपड़ी में सात लकड़हारे रहते थे. वे पेड़ों को काटकर लट्ठों को नदी में तैराकर उन्हें शहर में लाते थे. जब उन्होंने सुना कि सात धोबिनें आ रही हैं तो वे बस खिलखिलाकर हँसे. "हम देखेंगे! हमें किसी का डर नहीं है," उन्होंने डींग मारी. "जब वो आएँगी तब हम उन्हें आश्चर्य में डालेंगे!"



फिर सातों लकड़हारों ने खुद को जितना संभव हुआ उतना बदसूरत और भयावह बनाने का फैसला किया. उन्होंने अपने बालों को उलझाया और दाढ़ी को मसला. उन्होंने अपने हाथों, चेहरे पर कालिख पोती और कपड़ों को कीचड़ से पोता. फिर उन्होंने भयानक और डरावनी चीखों का अभ्यास किया.



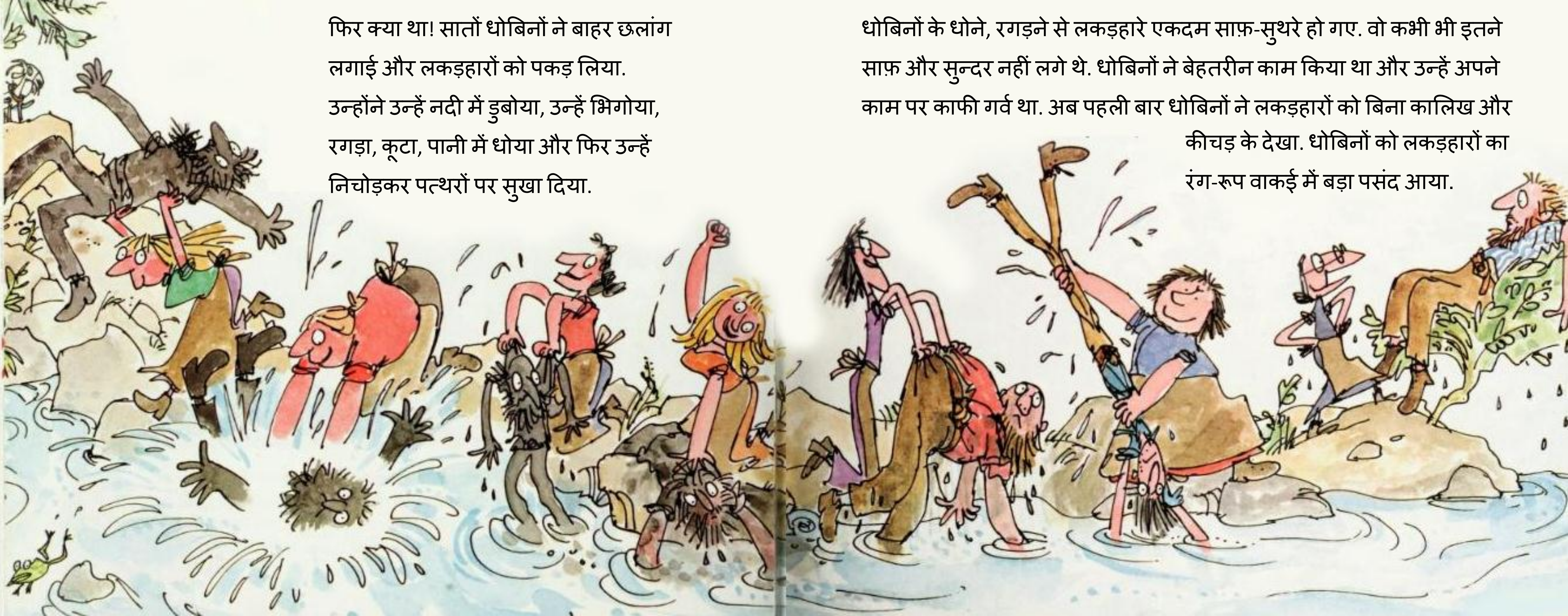
जल्द ही सातों धोबिनें अपनी बकरी-गाड़ी में पहाड़ के रास्ते को चीरते हुए लकड़हारों की झोपड़ी के पास आईं. जैसे की उनकी बकरी-गाड़ी मुड़ी वैसे ही उन्हें अपने सामने एक भयानक दृश्य दिखाई दिया. बकरी लिसेंडर डर के मारे रुक गई. यहां तक कि जंगली धोबिनें भी डर के मारे वहां से भागने वाली थीं.

लेकिन तभी मिन्नी को एहसास हुआ कि जो कुछ उन्होंने देखा था वो उनके जीवन में देखी सबसे गंदी और बदबूदार चीज़ थी. "चलो, लड़कियों!" मिन्नी चिल्लाई, "मत भूलो, कि तुम सब अव्वल दर्ज़े की धोबिनें हो!"



फिर क्या था! सातों धोबिनों ने बाहर छलांग लगाई और लकड़हारों को पकड़ लिया. उन्होंने उन्हें नदी में डुबोया, उन्हें भिगोया, रगड़ा, कूटा, पानी में धोया और फिर उन्हें निचोड़कर पत्थरों पर सुखा दिया.

धोबिनों के धोने, रगड़ने से लकड़हारे एकदम साफ़-सुथरे हो गए. वो कभी भी इतने साफ़ और सुन्दर नहीं लगे थे. धोबिनों ने बेहतरीन काम किया था और उन्हें अपने काम पर काफी गर्व था. अब पहली बार धोबिनों ने लकड़हारों को बिना कालिख और कीचड़ के देखा. धोबिनों को लकड़हारों का रंग-रूप वाकई में बड़ा पसंद आया.





धोबिनें फिर दुबारा मिस्टर बलथाजर टाइट के लिए काम करने नहीं गईं. उन्होंने लकड़हारों से शादी कर ली. लकड़हारों ने अपने रहने के लिए कुछ नई झोपड़ियां बनाईं. उसके बाद, जो लोग भी उस पहाड़ी रास्ते से गुज़रते थे, वे सभी धोबिनों और लकड़हारों को, ख़ुशी-ख़ुशी जीवनयापन करते हुए देखते थे.



समाप्त